शामली जागरण

ई-पत्रिका

01-10-2017 To 31-10-2017

Volume-16

परिचय

स्थापना/वर्तमान बोर्ड गठनः–

यह निकाय 01 अगस्त 1949 से नगर पालिका **घोषित** की गयी थी। 01 अप्रैल 1954 से चतुर्थ श्रेणी, अक्टूबर 1959 से तृतीय श्रेणी तथा 01 अप्रैल, 1963 से द्वितीय श्रेणी में है। नगर पालिका परिषद **शामली** का क्षेत्रफल 26.23 वर्ग कि0मी0 है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार नगर की जनसंख्या 1,07,233 है।

वर्तमान में बोर्ड का गठन 19 जुलाई 2012 में हुआ है। श्री अरविन्द संगल अध्यक्ष एवं 25 सदस्य निर्वाचित हुए। **शासन** द्वारा 05 सदस्य नामित हैं तथा श्रेत्रीय विधायक एवं सांसद नगर पालिका के पदेन सदस्य है।

पार्क में महापुरुषों की मूर्तियाँ

शामली जागरण

श्री लालचन्द्र भारती
(अधिशाषी अधिकारी)

नगर पालिका परिषद, शामली अक्टूबर 2017 के ई-पत्रिका शामली जागरण में स्वागत है | अक्टूबर माह में हुये विकास कार्यो को ई-पत्रिका शामली जागरण के माध्यम से आपसब तक पहुँचाना चाहते हैं | शामली नगर पालिका प्रत्येक माह ई-पत्रिका शामली जागरण के द्वारा नगर पालिका में हुये विकास कार्यो को आपसब के सामने लाने का प्रयास करता है | जिससे शामली नगर पालिका परिषद के विकास और नई योजनाओं से लाभान्वित हो सके | नगर पालिका परिषद शामली का एक मात्र उद्देश्य नगर पालिका का विकास है | जिसमे बिना किसी भेद-भाव, सभी समुदायों के लोगो को एकसाथ लेकर आगे बढने का उद्देश्य है | जिसके लिए नगर पालिका परिषद के निवासियों को इसमें सहयोग महत्वपूर्ण है | और नगर पालिका इसका उम्मीद करता है | नगरवासियों से अपील है की नगर को स्वच्छ और सुन्दर बनाने में नगर पालिका की मदद करे | अपने आस-पास साफ-सुथरा रखे | कूड़ा-कचरा डस्टबिन में रखे,गन्दगी न फैलाये | आने वाले कल अच्छा हो इसके लिये आज बेहतर बनायें |

Mr. Lal Chand Bharati
(Executive Officer)

I am happy to present the October 2017 issue to all of you. A number of projects have been commissioned in the month of October. The former will help smoothen the flow of traffic, reduce the travel time of citizens, ease the congestion and reduce pollution on nagar road. There have been a lot of lessons to learned and these insights will certainly stand in good stead with us in our endeavors in future. The one thing that stands out is the most active participation of citizens. We, the residence of the Nagar Palika Parishad Shamli respective of ages, castes, creeds, religions, localities have untidily participated in creation of Shamli's Swachh Nagar Palika Parishad proposal. As I look into the future with great expectation, it is this one aspect of the municipality which gives me the greatest hope. We in the Nagar Palika Parishad Shamli, would be very happy to receive your feedbacks on all matters that you feel are important.

I am delighted to present the tasks and issue of Shamli Nagar Palika by E-Patrika Shamli Jagaran in October 2017. Nagar Palika Parishad Shamli is grateful to the citizens who displayed tremendous enthusiasm and whole heartedly participated in numerous activities throughout this period. All of us should bear in mind that this is not end but a beginning of the exercise pertaining to development and Swachh Mission program. The coming years will surely be very hectic and eventful. Shamli promises to leave no room for complacency and will work even harder to achieve the targets. We solicit active participation from the citizens in our endeavor. We sincerely believe that decisions taken by Nagar Palika Parishad Shamli should benefit Nagar Palika Parishad Shamli and the citizens in the ultimate analysis. Many projects process in work in Nagar Palika Parishad Shamli for development our Nagar Palika and citizens. Thanks to all citizens of Nagar Palika Parishad Shamli for supporting to develop Shamli.

2 अक्टूबर महात्मा गाँधी जयंती !

एक ही दिवस पर दो विभूतियों ने भारत माता को गौरवान्वित किया । गाँधी जी एवं लाल बहादूर शास्त्री जैसी अदभुत प्रतिभाओ का 2 अक्टूबर को अवतरण हम सभी के लिये हर्ष का विषय है। सत्य और अहिंसा के बल पर अंग्रेजों से भारत को स्वतंत्र करा करके हम सभी को स्वतंत्र भारत का अनमोल उपहार देने वाले महापुरूष गाँधी जी को राष्ट्र ने राष्ट्रपिता के रूप में समान्नित किया। वहीं जय जवान, जय किसान का नारा देकर भारत के दो आधार स्तंभ को महान कहने वाले महापुरूष लाल बहादुर शास्त्री जी ने स्वतंत्र भारत के दूसरे प्रधान मंत्री के रूप में राष्ट्र को विश्वपटल पर उच्चकोटी की पहचान दिलाई। आज इस लेख में मैं आपके साथ राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी से सम्बंधित कुछ रोचक बातें साझा करने का प्रयास करुँगी| राष्ट्रपिता महात्मा ग़ांधी अर्थात मोहन दास करमचंद ग़ांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के काठियावाड़ प्रान्त में पोरबंदर नमक स्थान पर हुआ था | महात्मा ग़ांधी के इस जन्म-दिवस को समूचा राष्ट्र एक एक राष्ट्रीय पर्व के तौर पर मनाता है | गांधीजी के पिता करमचंद गांधी राजकोट के दीवान थे। इनकी माता का नाम पुतलीबाई था। वह धार्मिक विचारों वाली थी। उन्होंने हमेशा सत्य और अहिंसा के लिए आंदोलन चलाए। गांधीजी वकालत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भी गए थे। वहां से लौटने के बाद उन्होंने बंबई में वकालत शुरू की। महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। एक बार गांधीजी मुकदमे की पैरवी के लिए दक्षिण अफ्रीका भी गए थे। वह अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर अत्याचार देख बहुत दुखी हुए। उन्होंने डांडी यात्रा भी की। वह कई बार जेल गए। अब सारा देश उनके साथ था। लोग उन्हें राष्ट्रपिता कहने लगे। अंत में भारत को 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त हुई। गांधीजी सादा जीवन बिताते थे। उन्होंने हमको अहिंसा का पाठ पढाया। वह एक समाजसुधारक थे। उन्होंने छुआ-छूत को दूर करने का प्रत्यन किया। 30 जनवरी, 1948 को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गयी। महात्मा गाँधी के पूर्व भी शान्ति और अहिंसा की अवधारणा फलित थी, परन्तु उन्होंने जिस प्रकार सत्याग्रह, शान्ति व अहिंसा के रास्तों पर चलते हुये अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर किया, उसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता। तभी तो प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि -"हज़ार साल बाद आने वाली नस्लें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई इन्सान धरती पर कभी आया था।" 2 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रुप में भी मनाया जाता है क्योंकि अपने पूरे जीवन भर वह अहिंसा के उपदेशक रहे। 15 जून 2007 को संयुक्त राष्ट्र सामान्य सभा द्वारा 2 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रुप में घोषित किया गया है।

दीवाली की हार्दिक शुभकामनायें !

भारत में हिन्दुओं द्वारा मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है। दीपों का खास पर्व होने के कारण इसे दीपावली या दिवाली नाम दिया गया। दीपावली का मतलब होता है, दीपों की अवली यानि पंक्ति। इस प्रकार दीपों की पंक्तियों से सुसज्जित इस त्योहार को दीपावली कहा जाता है। इस दिन लक्ष्मी के पूजन का विशेष विधान है। रात्रि के समय प्रत्येक घर में धनधान्य की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मीजी,विघ्न-विनाशक गणेश जी और विद्या एवं कला की देवी मातेश्वरी सरस्वती देवी की पूजा-आराधना की जाती है। ब्रह्मपुराण के अनुसार कार्तिक अमावस्या की इस अंधेरी रात्रि अर्थात अर्धरात्रि में महालक्ष्मी स्वयं भूलोक में आती हैं और प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में विचरण करती हैं। जो घर हर प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुंदर तरीके से सुसज्जित और प्रकाशयुक्त होता है वहां अंश रूप में ठहर जाती हैं और गंदे स्थानों की तरफ देखती भी नहीं। इसलिए इस दिन घर-बाहर को ख़ूब साफ-सुथरा करके सजाया-संवारा जाता है। कहा जाता है कि दीपावली मनाने से लक्ष्मीजी प्रसन्न होकर स्थायी रूप से सदगृहस्थों के घर निवास करती हैं। त्योहारों का जो वातावरण धनतेरस से प्रारम्भ होता है,वह इस दिन पूरे चरम पर आता है। यह पर्व अलग-अलग नाम और विधानों से पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इसका एक कारण यह भी कि इसी दिन अनेक विजयश्री युक्त कार्य हुए हैं। बहुत से शुभ कार्यों का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना गया है। इसी दिन उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ था। विक्रम संवत का आरंभ भी इसी दिन से माना जाता है। यानी यह नए वर्ष का प्रथम दिन भी है। इसी दिन व्यापारी अपने बही-खाते बदलते हैं तथा लाभ-हानि का ब्यौरा तैयार करते हैं। हर प्रांत या क्षेत्र में दीवाली मनाने के कारण एवं तरीके अलग हैं पर सभी जगह कई पीढ़ियों से यह त्योहार चला आ रहा है। लोगों में दीवाली की बहुत उमंग होती है। लोग अपने घरों का कोना-कोना साफ करते हैं, नये कपड़े पहनते हैं। मिठाइयों के उपहार एक दूसरे को बांटते हैं,एक दूसरे से मिलते हैं। घर-घर में सुन्दर रंगोली बनाई जाती है, दिये जलाए जाते हैं और आतिशबाजी की जाती है। बड़े छोटे सभी इस त्योहार में भाग लेते हैं। यह पर्व सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाए जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक,सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व समाज में उल्लास, भाईचारे व प्रेम का संदेश फैलाता है।

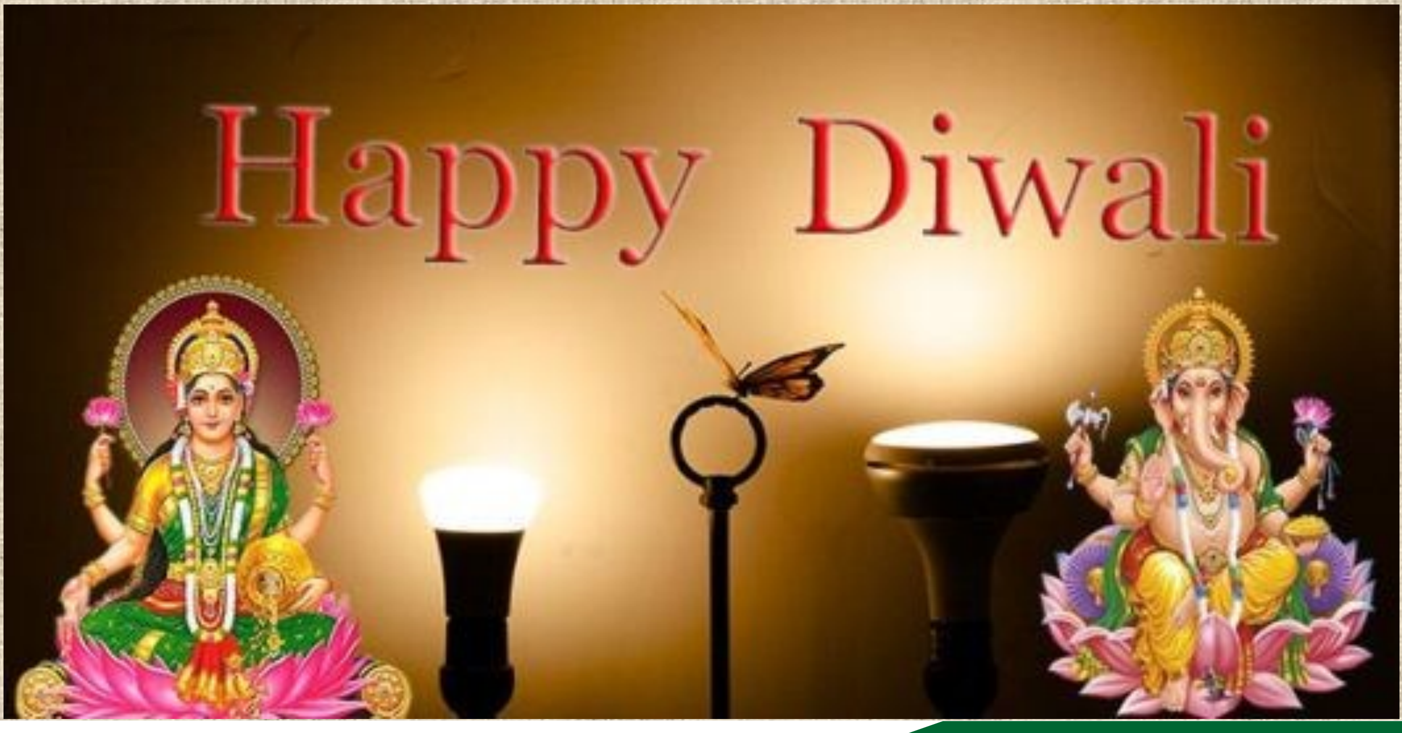

गोवर्धन पूजा

गोवर्धन पूजा को दीवाली के अगले दिन बाद मनाया जाता है। गोवर्धन पूजा पंजाब, हरियाना, उत्तर प्रदेश और बिहार में काफी प्रसिद्ध है। परंपरा के अनुसार इस दिन खास तौर पर गाय के गोबर से गोवर्धन पहाड़ बनाया जाता है, जिसे गोवर्धन पहाड़ के नाम से जाना जाता है। गोवर्धन पूजा को अन्नकूट पूजा के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन घरों में गाय के गोबर से गोवर्धननाथ जी की छवि बनाकर उनका पूजन किया जाता है तथा अन्नकूट का भोग लगाया जाता है। यह परंपरा द्वापर युग से चली आ रही है। श्रीमद्भागवत में इस बारे में कई स्थानों पर उल्लेख प्राप्त होते हैं। उसके अनुसार भगवान कृष्ण ने ब्रज में इंद्र की पूजा के स्थान पर कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोवर्धन पर्वत की पूजा आरंभ करवाई थी। इस संबंध में एक लोकप्रिय कथा है। कथानुसार भगवान श्री कृष्ण ने इंद्र का अभिमान चूर करने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठाकर संपूर्ण गोकूल वासियों की इंद्र के कोप से रक्षा की थी। जब इन्द्र का अभिमान चूर हो गया तब उन्होने श्री कृष्ण से क्षमा मांगी। सात दिन बाद श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत नीचे रखा और ब्रजबासियों को प्रतिवर्ष गोवर्धन पूजा और अन्नकूट पर्व मनाने को कहा। तभी से यह पर्व मनाया जाता है।

भाई दूज

भाई दूज का त्योहार भाई बहन के स्नेह को सुदृढ करता है । यह त्योहार दिवाली के दो दिन बाद मनाया जाता है। हिन्दू धर्म में भाई-बहन के स्नेह-प्रतिक त्योहार मनाये जाते है-एक रक्षाबंधन जो श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है । इसमें भाई बहन रक्षा की प्रतिज्ञा करता है । दूसरा त्योहार ' भाई दूज ' का होता है इसमें बहन भाई की लम्बी आयु की प्रार्थना करती है । भाई दूज का त्योहार कार्तिक मास की दुव्तीय को मनाया जाता है ।

भाई दूज व्रत कथा :-

छाया भगवान सूर्यदेव की पत्नी हैं जिनकी दो संतान हुई यमराज तथा यमुना. यमुना अपने भाई यमराज से बहुत स्नेह करती थी. वह उनसे सदा यह निवेदन करती थी वे उनके घर आकर भोजन करें. लेकिन यमराज अपने काम में व्यस्त रहने के कारण यमुना की बात को टाल जाते थे। एक बार कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यमुना ने अपने भाई यमराज को भोजन करने के लिए बुलाया तो यमराज मना न कर सके और बहन के घर चल पड़े। रास्ते में यमराज ने नरक में रहनेवाले जीवों को मुक्त कर दिया। भाई को देखते ही यमुना ने बहुत हर्षित हुई और भाई का स्वागत सत्कार किया। यमुना के प्रेम भरा भोजन ग्रहण करने के बाद प्रसन्न होकर यमराज ने बहन से कुछ मांगने को कहा। यमुना ने उनसे मांगा कि- आप प्रतिवर्ष इस दिन मेरे यहां भोजन करने आएंगे और इस दिन जो भाई अपनी बहन से मिलेगा और बहन अपने भाई को टीका करके भोजन कराएगी उसे आपका डर न रहे। यमराज ने यमुना की बात मानते हुए तथास्तु कहा और यमलोक चले गए। तभी से यह यह मान्यता चली आ रही है कि कार्तिक शुक्ल द्वितीय को जो भाई अपनी बहन का आतिथ्य स्वीकार करते हैं उन्हें यमराज का भय नहीं रहता ।

मुहर्रम पर्व की शुरुआत

यह समय सन 60 हिजरी का था | कर्बला जिसे सीरिया के नाम से जाना जाता था | वहाँ यजीद शहंशाह बनाना चाहता था, जिसके लिए उसने आवाम में खौफ फैलाना शुरू कर दिया | सभी को अपने सामने गुलाम बनाने के लिए यातनायें दी | यजीद पुरे अरब पर अपना रुतबा चाहता था | लेकिन उसके तानाशाह के आगे हज़रत मुहम्मद का वारिस इमाम हुसैन और उनके भाइयों ने घुटने नही टेके और जमकर मुकाबला किया | बीवी बच्चों की हिफाजत देने के लिए इमाम हुसैन मदीना से इराक की तरफ जा रहे थे | ब ही यजीद ने उनपर हमला कर दिया | वो जगह एक रेगिस्तान थी, जिसमे पानी के लिए एक नदी थी जिस पर यजीद ने अपने सैनिकों को तैनात कर दिया था | फिर भी इमाम और उनके भाइयों ने डटकर मुकाबला किया | वे लगभग 72 थे, जिन्होंने 8000 सैनिकों की फ़ौज को दाते तले चने चबवा दिए थे | ऐसा मुकाबला दिया की दुश्मन भी तारीफ करने लगे | लेकिन वो जीत नही सकते थे | वे सभी तो कुर्बान होने आये थे | दर्द, तकलीफ सहकर भूखे प्यासे रहकर भी लड़ना स्वीकार किया और यह लड़ाई मुहर्रम 2 से 6 तक चली आखिरी दिन इमाम ने अपने सभी साथियों को कब्र मे सुलाया | लेकिन खुद अकेले अंत तक लड़ते रहे | यजीद के पास कोई तरकीब नही बची और उनके लिए इमाम को मरना ना मुमकिन सा हो गया | मुहर्रम के दसवे दिन जब इमाम नमाज अदा कर रहे थे, तब दुश्मनों ने उन्हें धोखा से मारा | इस तरह से यजीद इमाम को मार पाया, लेकिन हौसलों के साथ मरकर भी इमाम जीत का हक़दार हुए और शहीद कहलाया | तख्तो ताज जीत कर भी ये लड़ाई यजीद के लिए हार एक बड़ी हार थी |

उस दिन से आज तक मुहर्रम के महीने को शहीद की शहादत के रूप में याद करते है |

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत खुले मे शौच से मुक्ति के सम्बन्ध में जागरूकता हेतु एक मार्मिक अपील

जागो युवा जागो स्वच्छ भारत है तुम्हारा अधिकार लेकिन पहले उठाओं पहले कर्तव्य का भार

****

जब होगी हर डगर, हर गली साफ |
तो ही पूरी होगी स्वच्छ भारत की आस ||

****

हर गाँव हर शहर होगा जब साफ |
तभी हो पाएगा देश का सही विकास ||

****

स्वच्छ भारत अभियान है एक आस |
ताकि हो भारत देश का सम्पूर्ण विकास ||

****

स्वच्छता ही है एक मात्र उपाए |
जो सभी को हमेशा स्वस्थ्य बनाए ||

****

स्वच्छता है महा अभियान |

स्वछता मे दीजिए अपना योगदान ||

****

हाथ से हाथ मिलाना है
गंदगी नहीं फैलाना है
स्वच्छता को अपनाना है

****

स्वच्छ भारत मिशन शामली

श्री लालचन्द्र भारती
(अधिशाषी अधिकारी) *(अध्यक्ष)*

: www.fageosystems.in

: info@fageosystems.in

Tel/Fax : 01204349756